पंचपर्व का पंचम दिवस

यम द्वितिया (भाई-दूज)

यम द्वितीया (भाईदूज) : 16 नवम्बर 2020

कार्तिक महीने की शुक्ल द्वितीया यम-द्वितीया कहलाती है। यही है हमारी भैया-दूज। इस पर्व का प्रमुख लक्ष्य भाई तथा बहन में पावन संबंध तथा प्रेम भाव की स्थापना करना है, इस दिन बहनें बेरी पूजन भी करती है और भाईयों के स्वस्थ तथा दीर्घायु होने की मंगल कामना करके उन्हें तिलक लगाती हैं। इस दिन बहन-भाइयों को तेल लगाकर गंगा-यमुना में स्नान करना चाहिए। यदि गंगा-यमुना में न नहाया जा सके तो भाई को बहन के घर नहाना चाहिए। भाई को भोजन करवा (खिला) कर, तिलक लगाना चाहिए। यदि बहन अपने हाथ से भाई को खाना खिलाएं, तो भाई की उम्र बढ़ती है और जीवन के कष्ट दूर होते हैं। इस दिन बहनों को अपने भाईयों को चावल खिलाना चाहिए। इस दिन बहन के घर भोजन करने का विशेष महत्व है, बहन, चचेरी, ममेरी अथवा धर्म की कोई भी हो सकती है। यदि कोई भी बहन न हो तो गाय, नदी आदि स्त्रीत्व पदार्थ का ध्यान करके अथवा उसके समीप बैठकर भोजन कर लेना भी शुभ माना गया है। इस दिन गोधन कूटने की प्रथा भी है। गोबर की मानव मूर्ति बनाकर छाती पर ईंट रखकर स्त्रियां उसे मूसलों से तोड़ती है। दोपहर के बाद बहन-भाई पूजा विधान से इस पर्व को प्रसन्नता से मनाते हैं। इस दिन यमराज जी के पूजन का विशेष विधान है।

कार्तिकमास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया 'यमद्वितीया' या 'भैयादूज' कहलाती है। इसे अपरान्हव्यापिनी ग्रहण करना चाहिये। इस दिन यमुना-स्नान, यम-पूजन और बहन के घर भाई का भोजन विहित है और शास्त्रीय मन के अनुसार मृत्युदेवता यमराज की पूजा होती है।

आज के दिन व्रती बहनों को प्रातः स्नानादि के अनन्तर अक्षतादि से निर्मित अष्टदल कमल पर गणेशादि का स्थापन करके यम, यमुना, चित्रगुप्त तथ यमदूतों के पूजन के अनन्तर निम्न मंत्र से यमराज की प्रार्थना करनी चाहिए-

धर्मराज नमस्तुभ्यं समस्ते यमुनाग्रज।
पाहि मां किंकरैः सार्धं सूर्यपुत्र नमोऽस्तु ते।।

निम्न मंत्र से यमुनाजी की प्रार्थना करें-

यमस्वसर्नमस्तेऽस्तु यमुने लोकपूजिते।
वरदा भव मे नित्यं सूर्यपुत्रि नमोऽस्तु ते।।

निम्न मंत्र से चित्रगुप्त की प्रार्थना करनी चाहिये-

मसिभाजनसंयुक्तं ध्यायेत्तं च महाबलम्।
लेखनीपट्टिकाहस्तं चित्रगुप्तं नमामयहम्।।

इसके बाद शंख, ताम्रपात्र या अंजलि में जल, पुष्प और गंधाक्षत लेकर यमराज के निमित्त निम्न मंत्र से अर्घ्य दें-

एह्येहि मार्तण्डज पाशहस्त यमान्तकालोकधरामरेश।
भ्रातृद्वितीयाकृतदेवपूजां गृहाण चार्घ्यं भगवन्नमस्ते।।

तत्पश्चात् बहन को चाहिये कि वह भाई को अन्न-वस्त्र-आभूषणादि देकर उसका शुभाशीष प्राप्त करें। इस व्रत से भाई की आयु वृद्धि और बहन को सौभाग्य सुख की प्राप्ति होती है। भारतीय संस्कृति में बहन दया की मूर्ति मानी गयी है। अतः शुभार्शीवादपूर्वक उसके हाथ से भोजन करना आयुवर्धक तथा आरोग्यकारक है। शुद्ध प्रेम के प्रतीक इस उत्सव को बड़े प्रेम से मनाना चाहिये।

पौराणिक आख्यान के अनुसार इस दिन भगवान यम अपनी बहिन यमुना के यहाँ मिलने जाया करते हैं और उन्हीं के अनुकरण पर इस दिन जो लोग अपनी बहिनों से मिलते, उनका यथेष्ट सम्मान पूजनादि करके उनसे आशीर्वाद रुप तिलक लगवाते हैं उन्हें इस दिन मृत्यु भय नहीं रहता। इस कथा के अनेक भावों में एक भाव यह है कि यद्यपि धर्मशास्त्र विधानानुसार कन्या पितृ-सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी नहीं है तथापि उसे पितृकुल की ओर से अनाधिकृत रूप में देय भगांश अवश्य प्राप्त हो इसके लिये ऐसे अनेक पर्व उत्सवादि का विधान, शास्त्रों में किया है जिन पर लड़कियों को पितृकुल की ओर से यथेष्ट सम्मान एवं धनदाय मिले। भैयादूज भी एक ऐसा ही पर्व है। इस अवसर पर भाई अपनी बहिनों के यहाँ उनकी पारिवारिक स्थिति का परिचय प्राप्त करते हैं, उनके सुख-दुःख की पूछते और अपनी कहते हैं। अपनी सामर्थ्यानुसार वे उसे भेंट देकर अपने भ्रातृ-स्नेह को दृढ़ करते हैं। यह दृढ़ पारिवारिक संगठन ही भारतीय-कुटुम्ब प्रणाली की जान है।

भैया दूज कथा-

सूर्य भगवान की स्त्री का नाम संज्ञादेवी था। इनकी दो संतानें, पुत्र यमराज तथा कन्या यमुना थी। संज्ञादेवी पति सूर्य की उद्दीप्त किरणों को न सह सकने के कारण उत्तरी ध्रुव प्रदेश में छाया बनकर रहने लगी। उसी छाया में ताप्ती नदी तथा शनिश्चर का जन्म हुआ। उसी छाया से अश्विनी कुमारों का भी जन्म बताया जाता है, जो देवताओं के वैद्य (भैषज) माने जाते हैं।

इधर छाया का यम तथा यमुना से विमाता-सा व्यवहार होने लगा। इससे खिन्न होकर यम ने अपनी एक नई नगरी यमपुरी बसायी, यमपुरी में पापियों को दण्ड का काम संपादित करते भाई को देखकर यमुना जी गौ लोक चली गई।

बहुत समय व्यतीत हो जाने पर एक दिन सहसा यम को अपनी बहन की याद आई, उन्होंने दूतों को भेजकर यमुना की बहुत खोज करवाई, मगर वह न मिल सकी, फिर स्वयं ही गौ लोक गये, जहां विश्राम घाट पर यमुना जी से भेंट हुई-भाई को देखते ही यमुनाजी ने हर्षविभोर हो स्वागत-सत्कार के साथ भोजन करवाया। इससे प्रसन्न हो यम ने वर मांगने को कहा-

यमुना ने कहा-'हे भैया! मैं आपसे यह वरदान मांगना चाहती हूं कि मेरे जल में स्नान करने वाले नर-नारी यमपुरी न जायें।'

वर बड़ा कठिन था, यम के ऐसा वर देने से यमपुरी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता अतः भाई को असमंजस में देखकर यमुना बोली-'आप चिन्ता न करें मुझे यह वरदान दें, जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करके इस मथुरा नगर स्थित विश्राम घाट पर स्नान करेंगे, वह तुम्हारे लोक न जायेंगे।'

इसे यमराज ने स्वीकार कर लिया। इस तिथि को जो सज्जन बहन के घर भोजन नहीं करेंगे उन्हें मैं बांधकर यमपुरी को ले जाऊंगा और तुम्हारे जल में स्नान करने वालों को स्वर्ग प्राप्त होगा। तभी से यह त्यौंहार मनाया जाता है।

रूप, बल, तेज आकर्षण का आधार है

कपिला साधना

इस बार यम द्वितीया के अवसर पर आप निम्न साधना कर अपने आपको धन्य कर सकते हैं। यदि आप चाहते हैं कि आपके व्यक्तित्व में तेज, बल और रूप का उचित सामजंस्य स्थापित हो तो आपको यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिये।

तेजस्वी सौन्दर्य और दिव्य आभा का मेल ही सही स्वरूप है योगिनी का। तनुकाय और शरीर पर आलोकित स्वर्णिम आभा उनका विन्यास रच देता है किसी स्वर्णिम मूर्ति का। उनकी शांति किंतु तीखी काली आभा से युक्त आंखों से ही स्पष्ट होती है उनकी अंदर छुपी मंत्र की विलक्षण तीव्रता...अंदर तक उतरती पैनी दृष्टि, साधनाओं का बल लिए-भगवान शिव की साक्षात् कृति, जो काम या उपभोग की वस्तु नहीं है।

'दीर्घकाय' भीषण आकृति वाली जिसका वर्ण श्याम है-ऐसी स्थूलकाय जिसके विशाल वक्ष स्थल पर बाल गज के समान स्तनद्वय शोभायमान हैं...जिनकी मुख मुद्रा अत्यंत रक्तिम और नेत्र भयोत्पादक हैं, ऐसी रक्त वस्त्रों को धारण करने वाली प्रचण्ड योगिनी मातेश्वरी की मैं वंदना करता हूँ।'

'एक हाथ में भाल और दूसरे में खड्ग धारण कर क्रोधातुर हो रही शेष दोनों हाथों में शत्रु के शव से निकले रक्त को अपने वस्त्रों में विलीन करती देवी! मेरे जीवन में सहायक हों..'

मात्र एक दिवस की साधना लेकिन उस रूप में चमत्कार प्रधान या अनुभूति प्रधान नहीं जैसा कि योगिनी से जुड़ी विचित्र कथाओं और कामोत्पादक स्वरूप का वर्णन पढ़कर मानस में चित्र बनता है।.एक सौम्य साधना मन में पूर्ण आह्लाद और आत्मीयता की भावना लेकर की जाने वाली साधना। इस साधना का प्रभाव दूसरे दिन प्रातः से ही साधक को मिलना प्रारंभ हो जाता है और यदि साधक कुछ समय तक नियम- बद्ध ढंग से साधना में रत रहे तो उसे योगिनी से साक्षात् मिलाप भी संभव होता है।

यम द्वितीया ही सही अवसर है ऐसी वरदायक और भगिनी स्वरूपा कपिला योगिनी को अपने जीवन में सादर निमंत्रित करने का, क्योंकि योगिनी तो एक ही आधार ढूंढ़ती है कि जहां उसे सही साधक मिले, वहां वह अपनी शक्तियां प्रकट कर दे। उन्हें जीवन का समस्त सुख वैभव और आनन्द दे दे। अन्य देवी-देवताओं की अपेक्षा कपिला अपना प्रभाव देती है तीक्ष्ण बली देकर, जिससे साधक में भर जाती है ओज और संघर्षशीलता।

यम द्वितीया की रात्रि में यह साधना प्रारंभ करें। रात्रि में वस्त्र आसन लाल रंग का रखते हुए दक्षिण मुंह होकर बैठें और तांबे के पात्र में 'लक्ष्मी यंत्र' स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, सिंदूर एवं तेल के दीपक से करें। जिस थाल को प्रातः स्थापित किया है उसका भी पूजन इसी प्रकार से करें तथा इस यंत्र पर चौंसठ लाल रंग के पुष्प, चौंसठ योगिनियों के पूजन रूप में अर्पित करें। यंत्र पर 'दस गोमती चक्र' अर्पित करें और प्रार्थना करें कि कपिला योगिनी अपनी समस्त शक्तियों के साथ दसों दिशाओं से मेरी रक्षा करें। एक बड़ा फल बलि रूप में समर्पित करें। वातावरण को धूप अथवा लोबान की सुगंध से भरा रखें। इसके पश्चात् 'रक्तवर्णीय माला' से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें। मंत्र जप के काल में दृष्टि दीपक की लौ पर एकाग्र रहे।

मंत्र-ॐ श्री क्लीं क्रीं कपिला योगिन्यै हुं फट्।

यह एक दिवस की साधना है लेकिन साधक की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह आगामी कितने दिनों तक इस साधना को करें। यों भी संकटकालीन परिस्थितियों में एक बार भी उच्चारण करने से तत्काल सुरक्षा चक्र प्राप्त होता ही है। यदि साधक किसी समस्या का हल जानना चाहता है तो रात्रि में उपरोक्त मंत्र का एक माला जप करके प्रश्न को सिरहाने रख कर सो जाए तो उसे अपने प्रश्न का उत्तर स्वप्न के माध्यम से प्राप्त हो जाता है। साधना की समाप्ति पर समस्त सामग्री निर्जन सथान में लाल वस्त्र में लपेट कर दबा दें।

इस प्रकार से यम द्वितीया का पर्व सही अर्थों में बन जाता है 'भगिनी पर्व' और सहज रूप से प्राप्त हो जाती है ऐसी भगिनी की शक्तियां जो अपने आप में तेजस्वी हैं, मांत्रोक्त क्रियाओं की पूंजी भूत स्वरूपा है। आप भी इस यम द्वितीया के शुभ अवसर पर इस साधना को सम्पन्न कर स्वयं को ओज, तेज और बल से परिपूर्ण कर लें।

भाईदूज के इस पावन पर्व पर आप भी अपनी बहनों को स्नेह प्रदान करें और तेज आकर्षण के लिये साधना सम्पन्न करें।

साधना सामग्री न्यौछावर- 1151/-

♦♦♦

पुत्रोत्पत्तिदाता एक सौ सित्तरिया यंत्र

इस यंत्र के बारे में कहा जाता है कि यदि किसी दम्पत्ति को संतान न हो रही हो या पुत्र प्राप्ति की इच्छा पूर्ण न हो तो एक सौ सित्तरिया यंत्र निश्चित ही रामबाण होता है। इस यंत्र की महिमा के बारे में यह भी उल्लेख मिलता है, कि इसके प्रभाव से मात्र पुत्र ही उत्पन्न नहीं होता, अपितु वह बालक पूर्ण तेजस्विता से युक्त, सदाचारी भी होता है। बालक के पुण्य से माता-पिता की भी यशोवृद्धि होती है एवं घर में सुख, संपत्ति, वैभव का विकास होता है।

प्रयोग विधि-इस यंत्र साधना को पति अथवा पत्नी दोनों में से कोई भी सम्पन्न कर सकता है। चाहे तो दोनों भी साधना में बैठ सकते हैं। इसके लिए किसी थाली में हल्दी का लेप लगाकर उसे अंदर से पूरा पीला कर लें। उस पर कुंकुम से निम्न यंत्र का अंकन करें। थाली के मध्य भाग में एक पुष्प का आसन देकर उस पर ''एक सौ सित्तरिया यंत्र'' पेंडल, मुद्रिका को स्थापित करके किसी भी माला से निम्न मंत्र की 11 माला जप करें। मंत्र इस प्रकार है-

।। ॐ ह्रीं सुपुत्रं देहि देहि ॐ शमभवाय नमः।।

और धारण कर लें। यह पेंडल/मुद्रिका आप अपना नाम, पिता/पति का नाम, गौत्र लिखकर प्राण-प्रतिष्ठित करवाकर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

न्यौछावर— पैंडल 1500रू., मुद्रिका 2100रू.